स्वर्णिम युग-द्रष्टा प्रजापिता ब्रह्मा को स्मृति दिवस पर स्नेह संपन्न भावांजलि

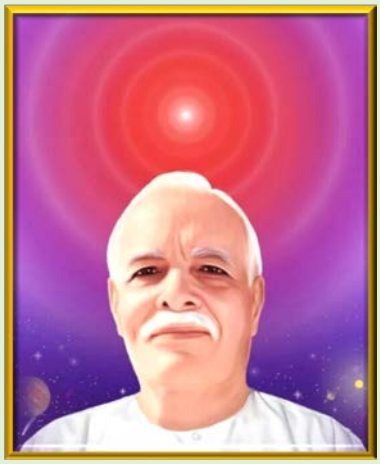

गीता ज्ञान दाता निराकार परमपिता परमात्मा शिव ने विश्व परिवर्तन अर्थ जिस साकार मनुष्य तन का आधार लिया, उनका नाम रखा प्रजापिता ब्रह्मा । हमारे वेदों और पुराणों में भी प्रजापिता ब्रह्मा का अनेक नामरूप से उल्लेख किया गया है, जैसे कि विश्वकर्मा, बृहस्पति, हिरण्यगर्भ | ज्योतिस्वरूप परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देकर पतित मनुष्य आत्माओं को पावन बनाने के कार्य का आरंभ १९३७ में किया | यह सृष्टि परिवर्तन के परमात्म कार्य में एवं अपनी साधना में प्रजापिता ब्रह्मा १८ जनवरी १९६९ तक व्यस्त रहे और उस दिन वो अपनी सम्पूर्ण अवस्था को प्राप्त कर अव्यक्त हुए | इस दिन को विश्वभर के ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्रो में अव्यक्त स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है और उनको भावसभर श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है |

नयी सतयुगी दुनिया की स्थापना का कार्य परमात्मा शिव ने अनुभवी एवं वृद्ध ब्रह्मा के माध्यम से किया जो कि लौकिक में एक उच्च कोटि के नारायण के भक्त थे और उस समय के एक बड़े कुशल जवाहरात के व्यापारी थे। उन का लौकिक नाम दादा लेखराज था। उन की साठ साल की उम्र में परमात्मा शिव ने उन के तन का आधार लिया और नवविश्व की स्थापना अर्थ पुरुष, प्रकृति और परमात्मा का संपूर्ण ज्ञान दिया और उनका अलौकिक़ नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखा। इसीलिए ब्रह्मा का आदि देव आदि पिता के रूप में अनेक प्रकार से गायन हैं| हमारे शास्त्रों में ब्रह्मा को चतुर्भुज के रूप में चित्रित किया गया है । उनके एक हाथ में ग्रन्थ दिखाया गया है जो आध्यात्मिक ज्ञान का प्रतिक है । उन्होंने परमात्मा शिव से प्राप्त ज्ञान से सारे विश्व की आत्माओं को अज्ञान रूपी अंधकार से बहार निकाल कर उजागर किया । दुसरे हाथ में खिला हुआ कमल पुष्प दिखाया गया

है जो पवित्रता का प्रतिक है । जो मनुष्य आत्माएं वर्त्तमान समय, प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से, परमात्मा के ज्ञान और योग की शिक्षा ले रही है उन्हों ने अपना जीवन, इस कलयुगी संसार में रहते हुए भी, पवित्र एवं दिव्य बनाया है उसी की यह यादगार है । तीसरे हाथ में कमंडल दिखाया गया है जो की एक जलपात्र है जो ज्ञानजल एवं ज्ञानामृत का प्रतिक है । वर्तमान समय ब्रह्मा के माध्यम से परमात्मा शिव ने दिए हुए ज्ञान रूपी जल का पान कर अनेक आत्माएं पावन बन रही है । साथ साथ हमें यह भी सन्देश मिलता है कि हमें औरों को भी इस ज्ञानामृत को पिलाना है। चोथे हाथ में माला दिखाई गयी है जो परमात्म सुमिरन का प्रतिक है । परमात्मा ने सिखाये हुए राजयोग के माध्यम से आज विश्व में अनेक आत्माएं परमात्मा की स्मृति में मग्न हो रही है । आईए हम भी राजयोग का अभ्यास कर परमात्मा की याद में मग्न हो जाए और हमारा गवाया हुआ देवत्व पुन: प्राप्त कर ले । ब्रह्मा के वस्त्र भी सफ़ेद दिखाए गए है वो भी प्रजापिता ब्रह्मा की पवित्रता, सौम्यता, अनाशक्तभाव, सादगी और सरलता का प्रतिक है ।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में प्रजापिता ब्रह्मा को प्यार से ब्रह्मा बाबा के नाम से बुलाया जाता है । उनकी कई विशेषताओं के कारण विश्व की अनेक आत्माओं के लिए वो प्रेरणामूर्ति रहे । वो एकांत प्रिय थे । बहुतों के बिच में रहते हुए भी उन्होंने अपना अधिक समय एकांत और शान्ति में व्यतीत किया । बाबा हरेक को आत्मिक दृष्टि से समत्व के भाव से देखते थे । लिंग, आयु, देश, जाती, धर्म इन सब बातों से वह उपराम थे । बाबा अत्याधिक सिंपल होते हुए भी व्यवहार और व्यक्तित्व से बहुत ही रॉयल थे । वो किसी के अवगुण नहीं देखते थे उनकी सब के प्रति शुभ भावना रहती थी । बाबा हमेशा निमित्त और निर्माण भाव में रहते थे और सब से न्यारे और सब के प्यारे थे । उन का परमात्मा शिव के साथ का संबंध सच्चाई का और अटूट था । ब्रह्मा बाबा अपने मन, शरीर, धन, समय के ट्रस्टी थे ।

उन्होंने विश्व परिवर्तन के इस कार्य के लिए बहनों को आगे किया

और वह खुद गुप्त रीति से उनको सहयोग करते रहे । उन्हों ने अपना सर्वस्व इस ज्ञानयज्ञ में समर्पित कर दिया और इस समग्र यज्ञ का संचालन बहनों को सौप दिया और संस्था का नाम भी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय रखा । आज समग्र विश्व में इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के ६५०० से भी अधिक सेवाकेंद्र कार्यरत है । महदअंश उन सभी सेवाकेंद्रो का संचालन ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा बहुत ही सुचारू रूप से हो रहा है ।

आज १८ जनवरी को प्रजापिता ब्रह्मा का जब ५४ वां स्मृति दिवस मनाया जा रहा है तब हम सब आत्माए उनकी राहों पर चल कर अपने जीवन को दिव्य गुणों से संपन्न बनाए और शिव परमात्मा के स्वर्णिम सतयुगी दुनिया की स्थापना के कार्य में सहयोगी बने ।

------ ॐ शांति ------

ब्र. कु. प्रफुल्लचन्द्र

सानडिएगो ; यु एस ए

(M) +91 98258 92710